यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

डॉक्टर ऑफ फिलॉसोफी की
उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक :
डॉ. चित्रा
ज्योति विद्यापीठ विश्वविद्यालय,
जयपुर (राज.)

शोधकर्त्री :
गणेश कंवर भाटी
JVR-1/22/10008

शोध केन्द्र
शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग संकाय
ज्योति विद्यापीठ विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
1.	प्रस्तावना	1—6
1.2	शोध का परिचय	6—7
1.3	शोध अध्ययन की आवश्यकता	7
1.4	शोध का महत्व	7—8
1.5	शोध के उद्देश्य	8—9
1.6	शोध की प्रासंगिकता	9
1.7	शोध प्रविधि	9—10
1.8	शोध साहित्य की समीक्षा	10—11
1.9	उपसंहार	11—12
1.10	निष्कर्ष	12
1.11	संदर्भ ग्रन्थ सूची	13

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

1. प्रस्तावना :–

आज प्राय: सभी भाषाओं में उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक विद्या मानी जाती है। बंगला से आया 'उपन्यास' शब्द अंग्रेजी के नावेल (Novel) का समानार्थी है। गद्य को अन्य विधाओं के समान उपन्यास भी आधुनिक युग की देन है। उपन्यास जीवन के विश्लेषण एवं चरित्र घटना कार्य में विशेष समर्थ होता है। विद्वानों ने उपन्यासों के अनेक भेद किये हैं किन्तु ऐतिहासिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास, पौराणिक उपन्यास मेरे विशेष रुचि का विषय रहे हैं।

हिन्दी साहित्य के विकास में उपन्यासों का विशेष महत्व रहा है। हिन्दी, राजस्थानी भाषाओं के ऐतिहासिक में उपन्यासों ने मुझे आकर्षित किया है। आधुनिकयुग में सूर्य की तरह जगमगाकर अपनी राष्ट्रीयता को प्रकाशित करने वाले यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली है। राजस्थान के मूर्धन्य उपन्यासकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का रचनाकर्म अपने समय, समाज और तत्कालीन समस्याओं को व्यापक एवं विस्तृत रूप में उकेरने में सफल रहा है। लगभग अठ्यानवे उपन्यास, छत्तीस कहानी संग्रह, आठ नाटक एवं बाल साहित्य इसके अतिरिक्त चार राजस्थानी भाषा में उपन्यास लिखे हैं। उनकी रचना संसार में स्पष्ट रूप से सुनी जा सकती है। समाज में ऐसी समस्या शायद ही बची हो, जो उनकी लेखनी से अछूती रह गई हो।

यादवेन्द्र शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक उपन्यासों में सामन्तवाद एवं नारी, दलित वर्ग, सामाजिक कुप्रथा (सतीप्रथा, दहेज, पर्दा एवं मृत्युभोज आदि), गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी (आर्थिक उपन्यास), धार्मिक उपन्यासों में पाखण्ड एवं अंधविश्वास की समस्याओं का प्रमुखता से चित्रण हुआ है। इसी तरह नरेन्द्र कोहली जी भी उपन्यासों में विशेष महत्त्व रखते हैं। इन्होंने समकालीन जीवन में सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक आतंक के नीचे डरे सहमें लोगों का चित्रण किया है। इनके उपन्यासों में शोषणचक्र चलाने वाली दमनकारी सत्ता तो है किन्तु उसके विरोध में शस्त्र लेकर उठ खड़े होने वाले जुझारू लोग नहीं हैं।

हिन्दी साहित्य का विकास चार भागों में विभाजित किया गया है जिसमें आधुनिक काल का हिन्दी साहित्य अपने आप में लोकप्रिय रहा है। हिन्दी साहित्य के विकास में अपभ्रंश भाषा से हिन्दी भाषा का विकास हुआ। हिन्दी भाषा साहित्य का योगदान महत्त्वपूर्ण माना गया है। भाषा साहित्य में आदिकाल, रीतिकाल, भक्तिकाल व आधुनिक काल के लेखकों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

उपन्यास – हिन्दी साहित्य के विकास में उपन्यासों में महत्त्व रहा है। शोध अनुसंधान में अनुसंधान करना, नया ज्ञान प्राप्त करना, नयी खोज करना, अनुसंधान के प्रारूपों व समस्याओं का पसना होता है। उपन्यास का अनुसंधान में विशेष योगदान रहा है। उपन्यास का अर्थ वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिम्ब है, 'उपन्यास' है। उपन्यास शब्द का प्रयोग प्राचीन संस्कृत साहित्य में भी मिलता है। उपन्यास का शाब्दिक अर्थ होता है उप–समीप तथा न्यास–थाती के योग से बना है जिसका अर्थ होता है (मनुष्य के) निकट रखी वस्तु अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिम्ब है 'उपन्यास' है।

हिन्दी साहित्य में 'उपन्यास' नवीनतम विधाओं में से एक है। अंग्रेजी में जिसे 'नावेल' कहते हैं। नॉवेल शब्द नवीन और लघु गद्य कचा दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है किन्तु अठारवीं शताब्दी के पश्चात साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

उपन्यास की परिभाषा : आधुनिक युग में जिस साहित्य विशेष के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसी प्रकृति को स्पष्ट करने यह शब्द सर्वथा समर्थ है।

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द्र के शब्दों में ''मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।''

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी उपन्यास की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि उपन्यास आधुनिक युग की देन है। नये उपन्यास केवला कथामात्र नहीं है। यह आधुनिक वैयक्तिवादी दृष्टिकोण का परिणाम है।

उपन्यास पर्याय जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति है। यथार्थ से तात्पर्य है कि जीवन जैसा दिखता या अनुभव होता है। इस जाने पहचाने जीवन के अनुभव को कल्पित घटनाओं तथा पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार रूपायित करता है। यह रूपायन कल्पित होते हुए भी मूलतः यथार्थ है।

नरेन्द्र कोहली व यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने कहा है कि उपन्यास का मूल तत्व मानव चरित्र है। जिसमें बाह्य पक्ष या आचरण पक्ष तो प्रस्तुत होता ही है, साथ ही उसके मन की विभिन्न स्थितियों का उद्घाटन भी होता है। इन दोनों उपन्यासकाकरों ने जीवन की कथा कहकर पाठकों की उत्सुकता जगाना है। बाद में उसी जिज्ञासा का शमन मानव चरित्र के आन्तरिक उद्घाटन तथा परिस्थितियों को प्रकाश में लाकर करता है। इस प्रकार सरस रूप होते हुए भी वह जीवन का गहन गंभीर विश्लेषण करता है।

उपन्यासकार अपने समकालीन जीवन को दृष्टि में रखकर उसके आधार पर उपन्यास में प्रस्तुत किया है और जीवन की व्याख्या एवं विश्लेषण किये हैं।

उपन्यास विधा का आधुनिक रूप में श्रीगणेश भारतेन्दु युग से ही माना उचित है। इस युग के कथाकार लाला श्रीनिवास दास ही प्रथम उपन्यासकार थे।

उपन्यासों के प्रकार – उपन्यासों के प्रकार तीन प्रकार से है और उनके भेद भी होते हैं। यादवेन्द्र शर्मा व नरेन्द्र कोली ने आंचलिक, पौराणिक, ऐतिहासिक मिथ्यात्मक, यथार्थवादी, सामाजिक, चरित्र, घटना राजनीतिक, आर्थिक, जीवनमूल्यबोध उपन्यासों की रचनाएं की है जिससे शोध कार्य में व्यापक क्षेत्र को संक्षेप में बाट सके।

व्यक्तित्व एवं कृतियाँ : डॉ. नरेन्द्र कोहली के व्यक्तित्व की अनेक परते हैं, अनेक पहलू हैं, अनेक आयाम हैं और अनेक भूमिकाएं हैं जो धीर–गम्भीर व्यक्तिव द्वारा सम्पादित की है। कोहली जी ने 'पुन्रारम्भ' नायक प्रथम उपन्यास में व्यक्तित्व, सामाजिक जीवन की तीन का वर्णन के लक्ष्य को लेकर उनके माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति के संक्रमणकालीन समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों की मानसिकता एवं जीवन की तीन पीढ़ियों के लोगों की मानसिकता उसी परिस्थितियों को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। नरेन्द्र कोहली पद्मश्री सम्मानित व्यक्ति रहे हैं। इनका सामाजिक चेतना का एक आयाम

राजनैतिक पक्ष भी है। इनका सामाजिक उपन्यासों में अभ्युदय उपन्यास भी हैं जो जिसके माध्यम से डॉ. नरेन्द्र कोहली ने रिसर्च वर्ग को सामाजिक रूप से अनुपादेय स्वार्थी और शोषण सिद्ध किया है।

नरेन्द्र कोहली सुप्रसिद्ध उपन्यासकार रहे हैं। इनका जन्म 6 जनवरी 1940 ईस्वी को स्यालकोट, पंजाब (विभाजन पूर्व) में हुआ। यह नगर अब पाकिस्तान में है। नरेन्द्र कोहली एक दायित्ववान रचनाका रहै। मानव जीवन में पाये जाने वाले अंतर्विरोध, विसंगतियों और सामाजिक विषमताओं को उन्होंने अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। कोहली जी ने भारत की प्रसिद्ध पौराणिक कथाओं रामकथा, सामाजिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, मिथ्य उपन्यासों पर उपन्यासों की रचना की है। कोहली जी की साहित्यिक कृतियों का सम्पूर्ण भारत में स्वागत हुआ और इन रचनाओं को कई पुरस्कारों से भी नवाजा गया है। नरेन्द्र कोहली ने सामाजिक उपन्यासों में सामन्तवाद, नारी, आर्थिक, दलित वर्ग, शोषण समस्याओं का सार्वकालिक है। समाज के लोगों में मानसिकता नारी के ऊपर हुए अत्याचार की किसी एक घटना मानो आज भी प्राचीनकाल की परम्परा को जीवित रखे हुए है जबकि समाज के विकास में नारी के योगदानों को नकारा नहीं जा सकता है।

नरेन्द्र कोहली जी सजग एवं चेतना सम्पन्न सृजनशील लेखक हैं। उन्होंने भारत में प्रचलित रामकथा के माध्यम से लोगों को जागरूक किया।

नरेन्द्र कोहली अपने विचारों में बेहद स्पष्ट, भाषा में शुद्धतावादी और स्वभाव से सरल लेकिन सिद्धान्तों में बेहद कठोर थे। उनके चर्चित उपन्यासों में पुनराम्भ, आतंक, आश्रितों का विद्रोह, सहा गया दुख, मेरा अपना संसार, दीक्षा अवसर, जंगल कह कहानी, संघर्ष की ओर, युद्ध, अभिज्ञान, आत्मदान, प्रतिकथा, कैदी, निचले प्लैट में संचित भूख आदि है। सम्पूर्ण रामकथा को उन्होंने चार खंडों में 1800 पन्नों में वृहद उपन्यास में पेष किया।

कोहली जी सांस्कृतिक राष्ट्रवादी साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी–अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जीवन शैली एवं दर्शन का सम्यक् परिचय करवाया है। हिन्दी साहित्य में महाकाव्यात्मक उपन्यास की विधा को प्रारम्भ करने का श्रेय उनको ही जाता

है। पौराणिक एवं ऐतिहासिक चरित्रों की गुत्थियों की को सुलझाते हुए उनके समाधान को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना कोहली जी की अन्यतम विशेषता रही है। इन्होंने अपने उपन्यासों को वर्ण्य विषय का मानकर रचनाएं की जिसमें सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, ऐतिहासिक आदि उपन्यास लिखे गये। नरेन्द्र कोहली को हिन्दी साहित्य जगत में साहित्यिक आन्दोलन के 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण के युग के प्रणेता कहा गया है।

विवाह – नरेन्द्र कोहली का विवाह डॉ. मधुरिमा के साथ हुआ इनके कार्तिकेय एवं अगस्त्य पुत्र थे।

उल्लेखनीय कार्य – महासभा, अभ्युदय, तोड़ो, कारा तोड़ो, वसुदेव, साथ सहा गया दुःख, पांच एब्सर्ड उपन्यास, आश्रितों का विद्रोह, प्रेमचन्द, हिन्दी उपन्रूास : सृजन और सिद्धान्त, दीक्षा।

उल्लेखनीय सम्मान : शलाका सम्मान, पंडित दीनदयाल उपाध्याय सम्मान, अट्टहास सम्मान, पद्मश्री पुरस्कार आदि।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' अपने 'चन्द्र' उपनाम से जाने जाते हैं। इनका जन्म 1932 में बीकानेर, राज. में हुआ तथा इनकी मृत्यु 3 मार्च 2009 को जयपुर में हुई तथ इनका कर्मक्षेत्र भारत रहा है। यह उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार भी है। इन्होंने राजस्थानी व हिन्दी भाषा में भी उपन्यास लिखे हैं। इन्होंने राजस्थानी भाषा में लाजराखो राणी सती की कथा पर रंगीन फिल्म भी बनाई; यह राजस्थानी भाषा की पहली फिल्म है। हिन्दी भाषा में लिखने वाले राजस्थानी लेखकों में यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' सबसे अग्रणी रहे हैं।

उपन्यास : संन्यासी और सुंदरी, दीया जला दीया बुझा, हजार घोड़ों पर सवार, कुर्सी गायब हो गई, एक और मुख्यमंत्री, खम्भा अन्नदाता, पराजिता, खून का टीका, ढोकन कुंजकली, गुलाबडी, सपना, मोहभंग आदि।

सम्मान : राजस्थान पत्रिका सृजन पुरस्कार की श्रेणी में वर्ष 1996 में गुलजी गाथा पर पुरस्कृत; साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर, राजस्थानी भाषा संस्कृति एवं साहित्य अकादमी बीकानेर सहित अनेक पुरस्काकरों से

सम्मानित यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने एक सौ से अधिक साहित्यिक कृतियों का सृजन किया था।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों 'हजार घोड़ों पर सवार' टीवी धारावाहिक बनाया था।

राजस्थान के उपन्यायकसरों में यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का रचनाकर्म अपने समय, समाज और तत्कालीन समस्याओं, आर्थिक शोषण, सामन्तवाद, नारी आदि पर व्यापक एवं विस्तृत रूप से उकेरने में सफल रहे हैं। समाज की ऐसी कोई समस्या शायद ही बची हो, जो उनकी लेखनी से अछूती रह गई हो।

इन्होंने स्त्रियों व दलितों पर सामंतों के होने वाले अत्याचारों को अपनी धारदार लेखनी के माध्यम से प्रबुद्ध समाज के सामने प्रस्तुत किया। इनके लेखन में सामाजिक समस्याओं का निरूपण, युग चेतना को सशक्त अभिव्यक्ति समकालीन जीवन का स्पन्दन और लोक जीवन का जीवंत रूप सहज ही देखा जा सकता है। 'चन्द्र जी ने अपने लेखन में सामाजिक एवं ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से जागरूकता लाने का प्रयास किया।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों की विषयवस्तु विविधता लिए हुए है। इनके साहित्य में ऐतिहासिक, राजनीतिक, आंचलिक, सामन्ती चेतना, यथार्थ, मिथ्यावादी, महानगरीय जीवन पर आधारित मनोविश्लेषणात्मक, प्रेमकथा आधारित, लोक कथा परक एक सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यासों का जखीरा है। इनके उपन्यासों में अन्याय, गरीबी, अशिक्षा, बेगार प्रथा, स्त्री शोषण, दलित पीड़ा, अत्याचार एवं शोषण के विविध रूप, सामाजिक कुप्रथाएं, धार्मिक पाखण्ड एवं अंधविश्वास इत्यादि समस्याओं का प्रमुखता से चित्रण हुआ है।

1.2 शोध का परिचय :

हिन्दी के साहित्य के विकास में उपन्यासकारों के महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' उपन्यासों का एवं नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

फील्डिंग के अनुसार – ''उपन्यास एक मनोरंजन पूर्ण गद्य महाकाव्य है।''

साहित्यिक जगत में उपन्यास गद्य में लिखी कथा है जिसमें प्रधानतः काल्पनिक पात्र व घटनाएँ रहती है। यह जीवन का अत्यन्त विस्तृत और विशद् दर्पण है।

1.3 शोध अध्ययन की आवश्यकता :–

आधुनिक हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा का उद्भव एक महत्वपूर्ण घटना है। उपन्यास साहित्य मानव जीवन का गद्यात्मक महाकाव्य माना जाता है। शोध अध्ययन के लिए यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन लिया है। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि आधुनिक युग में व्याप्त मानवीय पीड़ा एवं वेदना का यथार्थ निरूपण साहित्य देखने में मिलते हैं। दोनों उपन्यासकाकरों का मानव समुदाय के उत्थान, पतन, आशा–निराशा, जय–पराजय, आकुलता व्याकुलता एवं समस्याओं को व्यक्त करने में उपन्यास साहित्य पूर्णतः सफल रहा है सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याएं युग की सबसे गंभीर समस्या है, जिसकी अभिव्यक्ति हिन्दी उपन्यासों में बेहद मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

उपन्यास आज के साहित्य की सबसे प्रिय एवं सशक्त विद्या है। उसमें एक युग, एक समाज की घटना अथवा व्यक्ति के माध्यम से रूपायित होता है। यादवेन्द्र शर्मा व नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों से सामाजिक, समस्याओं के प्रति लोगों को जागरूक कर उनमें वर्तमान ऐतिहासिक दशा के प्रति विद्रोह भाव जगाये और उन्हें वांछित जीवन दिशाओं में अग्रसर होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इसमें युग–चेतना मुखर होती है। अतः उपन्यासकार में समाज के किसी न किसी वर्ग के जीवन दर्शन की सशक्त अनुभूति होती है।

1.4 शोध का महत्व :

किसी दो उपन्यासकारों का तुलनात्मक अध्ययन अध्येता को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। इससे उत्तम व सार्वभौमिक साहित्य की संकल्पना साकरित होती है।

तुलनात्मकवृत्ति मनुष्य की आदि एवं सहजप्रवृत्ति है। उपन्यासों की तुलना करने की वृत्ति के पीछे किसी न किसी हद तक वस्तु, विचार या किसी घटना, चरित्र को व्यावहारिक ज्ञान की भूमिका से ज्यादा विशद् रूप में और वेधक रूप में हासिल करने

और करवाने की इच्छा है और यों कहें तो जब से उपन्यासकारों में रसेन्द्रिय जागृत हुई है तब से तुलना कर रही हूँ। इस सहजवृत्ति ने मनुष्य की दृष्टि का विकास करके उसे सीमाबद्धता एवं संकुचितता के कटघरे से बाहर निकाला है।

कुल मिलाकर कहें तो साहित्य के विकास में उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन अपने आप में एक विशेष महत्व है क्योंकि किसी भी दो चीजों की तुलना करना हमें एक नई दिशा प्रदान करता है।

1.5 शोध का उद्देश्य :

साहित्य, कला–कृति एक जीवधारी प्राणी की तरह संश्लिष्ट रचना होती है। उसके विभिन्न आवयविक तत्वों में यह उद्देश्य छिपा रहता है। मानवीय शरीर में रक्त की भांति, वह उपन्यास के घटना, पात्र परिवेश आदि तत्वों के पारस्परिक संग्रयन में पर्यवसित रहता है। आज के भौतिकवादी युग में बिना उद्देश्य भी भला कहीं कोई कार्य करता है अर्थात् नहीं। इस प्रकार उपन्यासकाकरों का अपने उपन्यासों की रचना के पीछे एक निश्चित दृष्टिकोण रहा है। हिन्दी साहित्य के विकास में उपन्यासों की प्रवृत्ति जिसके भीतर भारतीयता को अन्वेषित करने की सूक्ष्म अंतः धारणा काम कर रही है। जैसे आर्थिक सामाजिक, आंचलिक उपन्यासकाकरों का लक्ष्य ग्रामचेतनागत प्राचीन एवं नवीन मूल्यों की टकराहट, सामाजिक एवं सांस्कृकि जिन्दगी के प्रश्न और समस्याएँ, आर्थिक शोषण एवं गरीबी की स्थितियां, लघुमानवोल्यान की संविधान प्रेरित कामना, वैज्ञानिक उन्मेष तथा जीवन यथार्थ के प्रति नयी आग्रहशीलता को नये साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप रूपायित करना था। डॉ. रामदरश मिश्र के अनुसार ''सामाजिक उपन्यास का उद्देश्य गतिमान समय में जीते हुए समाज के समग्र पहलूओं को उद्घाटित करना है।''

इस प्रकार शोध का उद्देश्य है कि देश की महान सांस्कृतिक पुनरूत्थान करने की प्रवृत्ति, पौराणिक साहित्य, ऐतिहासिक साहित्य तथा नारी की अस्मिता तथा समाज, उपन्यासकारों के जीवन मूल्यों, घटनाओं, पात्रों, चरित्र, आंचलिक उपन्यासों को जोड़कर राष्ट्रीय एकता, सामाजिक चेतना, जागृति उत्पन्न करना, नई मानिसकता तथा प्रगतिशील चेतना से समाज का उत्थान करना।

साहित्य विकास में उपन्यासों के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं –

1. यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में ऐतिहासिक, चरित्र एवं घटना प्रधान स्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के सामाजिक चेतना का अध्ययन
3. यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के जीवनमूल्य में अनुशीलन का तुलनात्मक अध्ययन।

1.6 शोध की प्रासंगिकता :

हिन्दी साहित्य के विकास में उपन्यासकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का जो समय रहा है वह बहुत महत्वपूर्ण रहा है और इस शोध कार्य में जो उपन्यास के रचनाओं की समय अवधि रही है। वह आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण रही है जैसे व्यक्ति के सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, दार्शनिक, राष्ट्रीय चेतना आदि की उत्पत्ति हो रही है। उपन्यासकारों के उपन्यासों के माध्यम से समाज में नारी अस्मिता पर भी महत्वपूर्ण कार्य एवं व्यति के जीवन मूल्यबोध का अध्ययन हो रहा है। हिन्दी साहित्य के विकास में यह महत्त्वपूर्ण कदम रहा है।

तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से लोगों में जागरूकता फैलायी जा सकती है। साहित्य में समाज में व्याप्त परिस्थितियों–विकृतियों, राजनीतिक, सामाजिक समस्याओं, संभावनाओं तथा मानव मन का चित्रण किया जाता है। मानव जीवन के इन विविध आयामों को विश्लेषण विवेचन करना ही किसी उपन्यासकाकरों का अभिष्ट होता है। नरेन्द्र कोहली व यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने अपने उपन्यासों में समाज की सभी परिस्थितियों–विडम्बनाओं का यथार्थ चित्रण किया गया है।

1.7 शोध प्रविधि :

हिन्दी साहित्य के विकास में शोध प्रारूप के लिए शोध में तुलनात्मक प्रविधि के माध्यम से अध्ययन करेंगे।

शोध विधि का अर्थ है शोध कार्य करने के विशेष नियम अथवा विधि। शोध कार्य की विशिष्ट तकनीक या कौशल भी इसे कह सकते हैं। शोधकार्य के विशेष नियम से तात्पर्य है रिसर्च मेथोडोलॉजी से। विभिन्न प्रकार की पद्धति शोध प्रविधि है।

प्रो. मेजर के अनुसार , ''प्रविधियाँ एक सामाजिक वैज्ञानिक के लिए वे मान्यतया सुव्यवस्थित तरीके हैं जिन्हें वह अपने अध्ययन विषय से संबंधित विश्वसनीय तथ्यों को प्राप्त करने हेतु उपयोग में लाता है।''

शोध प्रविधि एक साधन है जिसके माध्यम से शोधकर्ता अपने शोधकार्य में आवश्यक वास्तविक तथ्यों, सूचनाओं एवं आंकड़ों का संकलन कर यथार्थ तथा निश्चित निष्कर्ष निकालता है। विषय सामग्री के संकलन में सहायक होता है। शोध कार्य के लिए यह मान्य विधि है।

हिन्दी साहित्य के विकास में उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए शोध प्रविधि के माध्यम से द्वितीय स्रोतों से आंकड़े प्राप्त करूंगी। ऐतिहासिक अनुसंधान व अध्ययनों को आरम्भ करने का एवं ठीक प्रकार कार्य करने के लिये इन आकंड़ों की आवश्यकता होती है। जैसे पाठ्यपुस्तकें, विद्याचक्रकोश, पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं, हिन्दी विश्वकोश, संदर्भ ग्रन्थ सूची, विशिष्ट साहित्य, हस्तलिपि, निबंध लेख, अप्रकाशित सामग्री (शोध प्रबंध) समाचार पत्र (साप्ताहिक अथवा दैनिक) आदि।

1.8 शोध साहित्य की समीक्षा :

अनेक अध्ययनों में यह अध्याय आवश्यक होता है क्योंकि इसमें इस तथ्य के संकेत मिलते हैं कि दूसरों के द्वरा अब तक पहले ही कितना अध्ययन किया जा चुका है। जो कि शोधकर्ता की समस्या पर आधारित होता है परन्तु इसमें ध्यान रखना चाहिये कि केवल उपयुक्त साहित्य को ही सम्मिलित किया जाये न कि प्रत्येक विषय सम्बन्धी सभी पक्षों को।

प्रस्तावित शोध कार्य में हिन्दी साहित्य के विकास में उपन्यासकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन को सामने लाने में यथासम्भव भूमिका निभा सकेंगे। जहाँ तक मेरी जानकारी है मेरे द्वारा प्रस्तावित विषय

पर शोध कार्य नहीं हुआ है। इसलिए मैं इस विषय पर शोध कार्य करना चाहती हूं। इसमें शोध कार्यों के विवरण भी सम्मिलित होते हैं। इसमें प्रविधि का सफलता से प्रयोग किया जायेगा।

1. **चव्हाण, डॉ. गजानन सुखदेव (2016**) के अनुसार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यास में सामंती जीव के दस्तावेज को दर्शाया गया है जिसमें साहित्य को अेक अविस्मरणीय एवं भौतिक रचचनाएं दी हैं। इन्होंने आजादी से पूर्व एवं पश्चात अनेक उपन्यासों की रचना की है जिसमें राजस्थानी साहित्य के उपन्यासों में संवेदनात्मक रूप से चित्रित किया है। इसके साथ अनेक सामंती वर्ग, सामाजिक कुरीतियों को बढ़ावा देना तथा प्रवृत्तियों का यथार्थ रूप से चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

2. **डॉ. रणवीर रांा (1986)** के अनुसार हिन्दी साहित्य के उपन्यासों में चरित्र चित्रण के विकास पर बल दिया। इसके माध्यम से जीवन शैली एवं दर्शन का सम्यक् परिचय करवाया है।

3. **जैनेन्द्र जी** ने भी नरेन्द्र कोहली के प्रसिद्ध उपन्यासों की रचनाओं को पढ़ा और जिन शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की और खुले शब्दों में नरेन्द्र कोहली जी की प्रशंसा की।

4. **श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी, सरी वैकुअर (2008)** नरेन्द्र कोहली के 'तोड़ो कारा तोड़ो' की यात्रा बहुचर्चित उपन्यास है जिसमें दार्शनिक व आध्यात्मिक युग को दर्शाया गया है। द्विवेदी जी ने बताया कि नरेन्द्र कोहली जी उपन्यास में चरित्र की सत्यता बनाये रखते हैं। सारी घटना इनके इर्द–गिर्द घूमती है। इसमें संवेदनाओं के गहरे रंग भरे हैं। फलस्वरूप उपन्यास प्रभावशाली व आकर्षित बन सका है।

1.9 उपसंहार :

आज की यह आवश्यकता है कि हिन्दी साहित्य के विकास उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन हो, जिनसे भारतीय संस्कृति का एक व्यापक रूप प्रस्थापित हो सकता है– तुलनात्मक पद्धति है। जैसे सामना होने पर ही वीरों की वीरता का परिचय मिलता है वैसे ही तुलना करने से ही जान पड़ता है कि विषय विशेष का वर्णन में कौन–कौन

कहां तक समर्थ हुआ है। इस प्रकार उपन्यासकार यावदेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में अपना विशेष स्थान रहा है जिस प्रकार यादवेन्द्र शर्मा एवं नरेन्द्र कोहली जी ने सामाजिक उपन्यासों के माध्यम से सामंती नैतिकता–शासन के कर्त्तव्य, प्रजा के अधिकार, मर्यादा और जीवनमूल्यों आदि कीबात की है। इस प्रकार यह सच है कि तमाम उपन्यासों में नरेन्द्र कोहली में वही स्वीकार्य था जहां तक किसी की आस्था को ठोस न पहुंचे तो यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' उपन्यासों के भीष्म पितामह कहलाये हैं। यादवेन्द्र शर्मा जी ने समाज में नारी उपन्यास भी लिखे तथा आंचलिक उपन्यासों में बहुत ही प्रसिद्ध उपन्यास गुलाबड़ी एवं आखिरी सांस आदि का बहुत मनमोहक चित्रण किया है। नरेन्द्र कोहली जी ने भी दार्शनिक, धार्मिक, सांस्कृतिक चेतना जागृत करने के लिए 'दीक्षा' उपन्यास की रचना की, साथ ही ऐतिहासिक व पौराणिक उपन्यास भी लिखे हैं। यादवेन्द्र शर्मा एवं नरेन्द्र कोहली जी सजग एवं चेतना सम्पन्न सृजनशील लेखक हैं।

1.10 निष्कर्ष :

सम्पूर्ण विवेचन के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एवं नरेन्द्र कोहली जी ने अपने उपन्यासों में मानव जीवन के विविध आयामों व मानव मूल्यों एवं तत्वों के आधार पर वर्णित किया गया। यह हिन्दी के उन रचनाकारों में से हैं जिन्होंने अपना जीवन रचनाकर्म के बल पर सफलतापूर्वक कार्य किये हैं और अग्रणी लेखकों में अपनी पहचान बनायी है। इन्होंने सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत समाज में व्याप्त दुराचरण, भेदभाव, वैमनस्य, अमानवीयता और साम्प्रदायिकता जैसी कुप्रवृत्तियों को उजागर किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कोहली नरेन्द्र – हिन्दी उपन्यास : सुजन और सिद्धान्त, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977
2. यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' – गुलाबडी
3. वृहद हिन्दी कोष – मुकुन्दलाल श्रीवास्तव, कालिका प्रसाद, राजा वल्लभ सहाय।
4. नरेन्द्र कोहली के विषय में – कार्तिकेय कोहली, क्रिएटिव बुक कम्पनी, दिल्ली, सं. 2000
5. हिन्दी साहित्य के उपन्यासों में सामाजिक चेतना – डॉ. रत्नाकर पांडेय, पांडुलिपि प्रकाशन, सं. 1975
6. डॉ. सुनंदा पालकर – समाजवादी उपन्यासकार भैरवप्रसाद गुप्त, प्र.सं. 1997, विकास पकाशन, कानपुर
7. डॉ. वैजनाथ प्रसाद शुक्ल : 'भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में युग चेतना', प्र. सं. 1977, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली
8. श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' – जननी ड्योढी, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 12